मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

झूठे नेताओं के झूठे शपथ पत्र और अंधा चुनाव आयोग — 3
परीक्षा में फ़ेल होकर सड़कों पर उतरते छात्र

आत्मप्रचार पर टिकी नरेन्द्र मोदी सरकार — 5
''जो ज्यादा बोलते हैं सच नहीं बोलते''–सोनिया

सरकार के चहेते चीनी मिल मालिक — 6
योजना आयोग के 17.5 लाख के दो पैखानों का क्या होगा ?

सांसद कृष्णपाल व भाजपा सरकार नाकाम — 8
भागते भूत की लंगोटी भी मिलेगी क्या बीरेन्द्र को

वर्ष 27 अंक 23 फरीदाबाद, वीरवार, 16-31 अक्टूबर 2014 फोन : - 9999595632 ₹ 2

बुलेट मोदी, हवाई हुड्डा, राजरोगी चौटाला ! चुन लो, जिससे कराना है घोटाला

लगता है 'बुलेट' मोदी का पाखंड अभी चलेगा। हरियाणा और महाराष्ट्र दोनों राज्यों में भाजपा नम्बर वन आने जा रही है। हालाकि सरकार बनाने के लिये उसे जोड़-तोड़ पर ही निर्भर रहना होगा। हरियाणा के वोटर ने 'हवाई' हुड्डा को धरती दिखाने की ठान रखी है। रहे 'राजरोगी' औम प्रकाश चौटाला और उनका कुनबा, तो उन्हें चुनावोपरान्त सौदेबाज़ी में जेल से राहत बेशक मिल जाये पर राज-सुख नहीं मिलने वाला।

मज़दूर मोर्चा, फरीदाबाद ब्यूरो

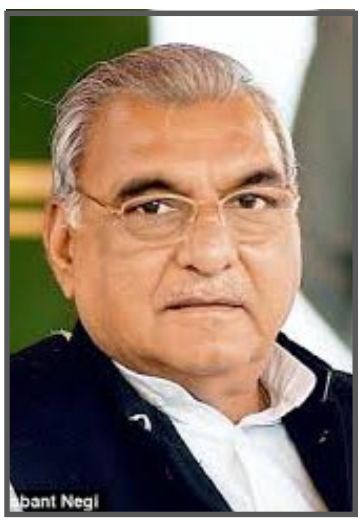

हरियाणा के मतदाताओं के सामने एक बार फ़िर उन्हीं चुनावों का दौर सामने है जिसमें चुनने को कुछ भी खास नहीं। नागनाथ और सांपनाथ के पुराने विकल्प में इस बार बिच्छूनाथ का प्रवेश हो गया है–लिहाज़ा विकल्पहीनता भी उसी अनुपात में बढ गयी है।

तीनों मुख्य दलों, कांग्रेस, भाजपा, इनेलो के पास सिवाय एक-दूसरे को चोर और बदमाश बताने के कुछ और जनता के सामने रखने को नहीं बचा है। विडम्बना यह है कि वे एक दूसरे के बारे में जो कह रहे हैं सच कह रहे हैंऔर सच के सिवाय कुछ नहीं कह रहे हैं। झूठ वे केवल तब बोलते हैं जब उन्हें अपने दावे पेश करने होते हैं।

चौटालों को लीजिये जिनकी लूट और कूट को हरियाणा की जनता 10 साल गुजरने के बाद भी भुला नहीं पाई है। औम प्रकाश चौटाला पुत्र सहित जेल भुगत रहे हैं पर कोई सहानुभूति लहर दिखाई नहीं पड़ती। चौधरी देवी लाल का नाम पूरी तरह बेच खाने के बाद अब वे इस बाऊंस हुए चेक को भुनाने की जुगत भिड़ा रहे हैं। भूपेन्द्र सिंह हुड्डा और उनकी कांग्रेस का स्वाद अभी हरियाणा वासियों के लिये ताज़ा है। लोग़ों को लाइलाज भ्रष्टाचार के गर्त में धकेल कर स्वयं प्रदेश के भू-संसाधनों को कार्पोरेटी लूट के हवाले करने में माहिर हुड्डा जब अच्छे शासन या बेहतर शिक्षा/रोज़गार की बात करते हैं तो उनकी खुशफ़हमी पर हंसा ही जा सकता है। सीधा समीकरण यह है कि अगर उनकी नाव डूब न रही होती तो इतने चूहे (कांग्रेसी) पार्टी छोड़ कर भाजपा व अन्य दलों की ओर न गये होते।

'बुलेट' मोदी को भी डिरेल तो होना ही है। फ़िलहाल मतदाता उन्हें रफ़्तार तो पकड़ने देगा पर अपने दम बहुमत की मंजिल नहीं पाने देगा। कांग्रेस और चौटाला से घोर निराशा भाजपा को हरियाणा में आज तक का सबसे अच्छा परिणाम देने जा रही है। मोदी के पाखंड का जादू अभी चल रहा है। इसका बुखार उतरते एक साल तो लगेगा। यह भी तय है कि नवम्बर से कार्पोरेट के हक में मोदी का खुला खेल शुरू होने जा रहा है पर तब तक हरियाणा के मतदाताओं के हाथों के तोते उड़ चुके होंगे।

कुलदीप बिशनोई की हजकां व दूसरे बरसाती मेंढकों का इस चुनावी दलदल में क्या होगा ? जाहिर है कुलदीपों, विनोदों, कांडों के पास भी बहाने को बेतहाशा पैसा है। कुछ निर्दलीय भी अपना खेल खेलना जानते हैं। कुल मिलाकर ये दहाई की संख्या तक पहुंचे या न पहुंचे पर इतना तो तय है कि चुनाव बाद की मंडी में इनकी भी बोली ठीक-ठाक ही लगेगी। सवाल है कि चौधरी बिरेन्द्र सिंह को क्या मिला और बाबा रामदेव क्यों खामोश है ? जवाब है कि उल्लू बने चौधरी को मिला कद्दू और ठिकाने लगे बाबा की बोलती हो गयी है बंद! बिरेन्द्र और रामदेव दोनों को भाजपा ने चुनाव प्रचार के लिये बुलाया। पार्टी की मुसीबत यह कि बिरेन्द्र बोले तो क्या बोले और बाबा बोले तो क्यों बोले!

ख़बर दार

सफ़ाई राजा के नौ रतन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बापू के साथ अपना नाम जोड़ने की गरज में 2 अक्टूबर को झाड़ू पकड़ कर फ़ोटो -फ़ाटो तो करा ली पर चन्द मिनटों का यह मीडिया सेशन रोज़-रोज़ तो दोहराया नहीं जा सकता। लिहाज़ा मोदी ने यह कह कर साथ ही पल्ला भी झाड़ लिया कि सफ़ाई का काम अन्नत: 125 करोड़ भारतीयों को ही करना है। लगे हाथ उन्होंने अपने नौ सफ़ाई रत्नों के नामों की घोषणा भी कर डाली ताकि समय-समय पर मीडिया सेशन आगे भी चलते रह सकें।

यह भी गौर किया जाना चाहिये कि मोदी ने इस सारे अभियान को महज़ झाड़ू से कचरा हटाने तक सीमित कर छोड़ा है। ये नौ रतन भी झाड़ू के साथ फ़ोटो कराते दिखाई पड़ रहे है। लगता है जैसे जाम पड़े उफ़नते सीवर, औद्योगिक अपशिष्ट का खुला प्रवाह और सफ़ाईकर्मियों के नारकीय जीवन का कोई योगदान ही न हो। मोदी और उसके नौ रत्न अगर इन मुद्दों को उठायेंगे तो सरकारीतन्त्र का भ्रष्टाचार, कार्पोरेट जगत की लूट और सफ़ाईकर्मियों की उपेक्षा भी सामने आ जायेगी। जाहिर है, यह न मोदी का सरोकार हो सकता है न इन नौ रत्नों का ही।

नौ रत्नों में एक आमिर खान को छोड़ दीजिये तो बाकी सभी नीयत और फ़ितरत दोनों से 'गंदगी' के जनक ही हैं। श्रीमान भारत रत्न तेंदुलकर को ही लीजिये। 24 वर्ष क्रिकेट खेल कर हज़ारों करोड़ की कमाई करने वाला यह शख्स क्रिकेट की उस गन्दगी को नहीं देख पाया जो सट्टेबाज़ी के रूप में देश की तमाम पीढियों को इस जुए की लत लगाती आई है। पैसा उगलने वाली क्रिकेट नाम की कामधेनु को दशकों से बड़ी पार्टियों के राजनेता और उनके चमचे क्रिकेटर प्रशासक बन कर दुहते आ रहे हैं। लेकिन यह गन्दगी भी तेंदुलकर को कभी नज़र नहीं आई।

बॉलीवुड से मोदी ने श्रीमान सलमान खान और बहन प्रियंका चोपड़ा को भी नौ रत्नों की सूची में डाला है। कौन नहीं जानता कि समस्त बॉलीवुड इन्डस्ट्री काले धन के निवेश से चल रही है। सलमान खानों और प्रियंका चोपड़ाओं की फिल्मों में जो सैंकड़ों करोड़ का मुनाफ़ा दिखाया जाता है वह भी काले धन को सफ़ेद करने की लाँड्री जैसा ही है। क्या कभी ये स्टार इस गन्दगी के ख़िलाफ़ भी झाड़ू उठायेंगे ?

श्रीमान शशि थरूर को तो खैर गंदगी नज़र आ ही नहीं सकती। मनमोहन सिंह की सरकार में बरसों मन्त्री रहे इस शख्स को न कोई स्कैम नज़र आया और न लुटती पिटती जनता जिसे वह 'कैटल क्लास' कहा करता था। संयुक्त राष्ट्र संघ से लाखों डॉलर पेंशन पाने वाला थरूर एकादमिक दुनिया का प्राणी है न कि श्रम का प्रशंसक। उसे नौ रत्नों में शामिल भी इसलिये किया गया है कि वह धीरे-धीरे मोदी का प्रशंसक बनता जा रहा है।

नौ रत्नों की सूची में गुजराती हिन्दी बोलने वाले पात्रों का टी.वी. सीरियल 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' के कलाकार भी हैं। ये भी पूर्ण मेकअप के साथ चमकदार स्टेजों पर काम करने के आदी लोग हैं। ये नौ रत्न भी मोदी के साथ उसी उम्मीद से जुड़ रहे हैं कि इसमें उनकी मार्केट वैल्यू और बढेगी।

क्या 2 अक्टूबर के बाद आपने कहीं भी सफ़ाई में कोई फ़र्क देखा है? क्या उपरोक्त सजे-धजे पुतलों (नौ रत्नों) के दम पर इस देश में सफ़ाई आ सकती है ? हद से हद गांधी के नाम को कांग्रेसी बपौती से छीन पाने की मोदी की इच्छा पूरी होने में यह पाखंड सहायक हो सकता है।

'निष्पक्ष' न्यायपालिका का ढंग 'बीमार' कैदी लड़ता चुनावी जंग

दिल्ली ब्यूरो

लानत है ऐसी न्यायपालिका पर जो सज़ायाफ़्ता कैदी को जेल के भीतर रखने की अपेक्षा उसे न केवल छुट्टा चुनाव प्रचार की इजाजत दे रही है बल्कि खुले आम बार-बार वही अपराध करने का खम ठोंक, देश की कानून व्यवस्था को चुनौती देने से भी रोक पाने में असमर्थ है।

जनवरी 2013 में ओमप्रकाश चौटाला, उनके पुत्र अजय व तीन अन्य सहयोगियों को 10-10 साल की सज़ा-ए-कैद सुनाकर तिहाड़ जेल भेज दिया गया था। साथ ही 50 छोटे-मोटे शिक्षा अधिकारियों को भी विभिन्न सज़ाएं सुनाई गयी थीं जिन्होंने इनके दबाव में आकर ग़लत काम किया था। सर्वविदित है कि वह ग़लत काम था 3200 से अधिक योग्य अध्यापकों की भर्ती लिस्ट को बदल कर अपने चहेतों को भर्ती करना। सुधी पाठक इस तथ्य पर अवश्य गौर करें कि इस सारे गिरोह को जो सज़ा मिली है वह अध्यापक भर्ती करने के लिये नहीं मिली बल्कि पहले से भर्तीशुदा अध्यापकों की लिस्ट बदलने के लिये मिली है।

ट्रायल कोर्ट ने तो 10 साल तक मुकदमें की सुनवाई करने के बाद अपना फ़ैसला सुना कर सबको जेल भिजवा दिया; लेकिन उसके बाद हो क्या रहा है ? जेल में जाते ही बड़े लोग 'बीमार' हो जाते हैं। बीमारी के नाम पर इन्हें, इनके मनपसंद पंचतारा अस्पतालों में भेज दिया जाता है। वहां ये वह सब कुछ करने को स्वतंत्र होते हैं जो ये जेल में नहीं कर सकते।

अब तक के 20 महीनों में से औम प्रकाश चौटाला ने आधा समय भी जेल में नहीं गुजारा। जेल में रहने से उनकी सेहत बिगड़ जाती है, इसलिये वे गुड़गांव के एक पंचतारा अस्पताल में रहते हैं। जानकार तो बताते हैं कि चौटाला जी की इस अस्पताल में हिस्सेदारी भी है। सवाल यह पैदा होता है कि जेल की सज़ा मौज मस्ती करने या सेहत बनाने के लिये दी जाती है या कष्ट भोगने के लिये ? जाहिर है कष्ट भोगने में सेहत कैसे बन सकती है, जब आदमी की स्वतंत्रता ही छीन ली जाय, मन ही दुखी हो।

जेल नियमों के अनुसार बीमारी की हालत में कैदी के इलाज की पूरी ब्यवस्था है। एक छोटा सा अस्पताल तो जेल में ही होता है और जरूरत पड़ने पर कैदी को बड़े अस्पताल भी भेजा जाता है। लगभग हर ज़िला स्तर के सरकारी अस्पताल में कैदी वार्ड होता है। इसमें भर्ती कैदी को वे सभी सुविधायें तो मिलती हैं जो एक बिमार को चाहिये, परन्तु वह रहता है वहां भी जेल की ही तरह। बाकायदा पुलिस का पहरा रहता है, वहां (मिलने वाला) कोई आ-जा नहीं सकता। विशेष परिस्थितियों में यहां मरीज को हथकड़ी लगाकर चारपाई से बांध भी दिया जाता है।

लेकिन औम प्रकाश चौटाला को यह कौन सी बीमारी है जिसका इलाज न जेल के अस्पताल में है और न ही दिल्ली भर के किसी अस्पताल में ? यह है राज-रोग ! राज छूटे 10 साल हो गये और आगे भी मिल पाने के आसार अति धूमिल हैं। इसके लिये जरूरी है कि वे सब प्रयास किये जायें जिससे राज पुन: प्राप्त हो सके। यह सब जेल के भीतर या सरकारी अस्पतालों में रहकर तो संभव हो नहीं सकता। यह तो अपने घर के असपताल मेदान्ता में ही संभव हो सकता है। हो भी रहा है। 25 सितम्बर से पहले तक तो चौटाला अपने अस्पताल से ही राजनीतिक गतिविधियां चलाते रहे। परन्तु 25 सितम्बर को तो उन्होंने कमाल ही कर दिया। एयर एम्बुलेंस (हेलिकॉप्टर) लेकर सीधे जींद के सभा स्थल पर पहुंच गये। वहां जाकर जो वह बोले हैं वह तो पूरी न्यायिक व्यवस्था के मुंह पर किसी तमाचे से कम नहीं। लगता है उन्होंने इस व्यवस्था को खरीद रखा है। कहते हैं... ऐसा जुर्म वे सौ बार करेंगे। इसके बावजूद दिल्ली हाई कोर्ट ने उनको तुरन्त जेल में बन्द करने के बजाय 17 अक्टूबर तक छुट्टा घूमने की इजाजत और देदी। अब तो उन्हें एयर एम्बूलेंस में चलने का नाटक नहीं करना पड़ रहा। वे अपनी निजी विशेष बस से ही गांव-गांव शहर-शहर लोग़ों से 'राज' मांगते घूम रहे हैं। उन्हें भरोसा है कि राज मिलने के बाद के जोड़-तोड़ में उन्हें जेल से भी मुक्ति मिल जायेगी।

इस मामले में सबसे बड़ा प्रश्न चिन्ह दिल्ली हाई कोर्ट की निष्ठा व ईमानदारी पर लगता है। जेलों में कितने ही ग़रीब व कमज़ोर कैदी और कई बार तो बेकसूर होते हुए भी इलाज के अभाव में तड़प-तड़प कर मर जाते हैं, हाई कोर्ट उन्हें भी मेदान्ता में भेजने का प्रबन्ध क्यों नहीं करती ? अमीर व बड़े राजनीतिकों के लिए कोई अलग कानून है इस देश में ?

सी बी आई की अर्जी पर हाई कोर्ट ने चौटाला को तलब किया। वे 10 तारीख को पेश भी हुए, थोड़ा नाटक भी हुआ। लेकिन उन्हें कोर्ट से सीधे जेल भेजने की बजाय अगले दिन स्वत: जेल जाने को कह दिया।